K. Nand M.A. II Sem

(8)

Question:→ Describe the Major Sources of errors in Interviews.

साक्षात्कार में त्रुटियों के प्रमुख स्रोतों का वर्णन करें।

Ans:→

Interview प्रदत्त संग्रह का एक महत्वपूर्ण Tool है। इसके व्यवहार करने की विधि इतनी सरल एवम लचीली है जो अन्य विधियों में नहीं पायी जाती है। यद्यपि कि साक्षात्कार का प्रयोग मनोवैज्ञानिक शोधों, शैक्षणिक शोधों एवम समाजशास्त्रीय शोधों में काफी होता है, फिर भी अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि विशेषज्ञों ने कुछ वैसे स्रोतों का पता लगाया है जिससे साक्षात्कार में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ उत्पन्न हो जाती है। इन त्रुटियों के स्रोतों का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है:→

(i) साक्षात्कारकर्ता की मनोवृति (Attitude of the Interviewer)

साक्षात्कार में उत्पन्न त्रुटि का प्रमुख स्रोतों में साक्षात्कारकर्ता की मनोवृति भी एक है। "Gordon" (1971) ने अपने अध्ययन में पाया है कि जब साक्षात्कारकार प्रत्याशी के बारे में पहले से एक निश्चित प्रतिकूल या अनुकूल मनोवृति बना लेते हैं, तो इससे प्रत्याशी द्वारा दिये गए उत्तरों का सही मूल्यांकन तथा अभिलेखन साक्षात्कारकर्ता द्वारा नहीं हो पाता है तथा इससे निष्कर्ष पक्षपातपूर्ण हो जाता है जैसे भारतीय परिवेश में हिन्दू एवम मुस्लिम के बीच का साक्षात्कार पूर्वधारणा, पूर्वाग्रह से प्रेरित होकर त्रुटिपूर्ण हो जाता है।

(2) प्रश्नों की अबोधगम्यता (Incomprehensibility of the Questions): → साक्षात्कार के लिए यह आवश्यक है कि दिये गये प्रश्न बोधगम्य हो। अगर ऐसा नहीं होता है तो प्रत्याशी अपना उत्तर ठीक ढंग से नहीं दे पाता है और ऐसी परिस्थिति में साक्षात्कार में त्रुटि होना अवश्यम्भावी हो जाता है। ऐसी अवस्था में जो आँकड़े प्राप्त होते हैं उनके आधार पर साक्षात्कार कर्ता हमेशा एक त्रुटिपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँच पाते हैं। अतः प्रश्नों की अबोधगम्यता एक प्रमुख साक्षात्कार के त्रुटि का प्रमुख स्रोत है।

(3) साक्षात्कार परिस्थिति में हार्दिकता की कमी: Lack of Warmth in the Interview Situation

"Gorden" (1979) ने पता लगाया है कि साक्षात्कार की परिस्थिति में साक्षात्कार कर्ता द्वारा हार्दिक एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार के अभाव में निष्कर्ष पक्षपातपूर्ण हो जाते हैं। इनके का तात्पर्य है कि साक्षात्कार कर्ता अपने प्रश्नों का ढंग प्रेमपूर्वक नहीं करते हैं तो वैसी परिस्थिति में प्रत्याशी द्वारा दिये गये उत्तर ठीक ढंग से नहीं हो पाता है या प्रत्याशी सही सूचनाएँ प्रदान करने में पूर्ण सहयोग नहीं देता है जिसके कारण जो भी प्रदत्त प्राप्त होते हैं वे दोषपूर्ण एवं त्रुटिपूर्ण होते हैं।

(4) प्रत्याशी में प्रेरणा की कमी (Lack of Motivation in Respondent): → जब साक्षात्कार के लिए बुलाए गये प्रत्याशी

किसी कारण से साक्षात्कार देने के लिए प्रेरित नहीं होते हैं, तो ऐसी परिस्थिति में भी साक्षात्कार के प्रदत्त दोषपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि इन आँकड़ों में वास्तविकता का अभाव रहता है और वे प्रत्याशी के वास्तविक व्यवहार या विचार का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्वाभावतः ऐसी परिस्थिति में प्राप्त आँकड़े दोषपूर्ण इस हद तक हो जाते हैं कि उससे किसी प्रकार का वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुँचना संभव नहीं हो पाता है।

(5) साक्षात्कार की लम्बी अवधि (Long duration of Interview): ⟶ साक्षात्कार की लम्बी अवधि होने से प्रत्याशी में घबराहट एवम् संवेगात्मक अस्थिरता बढ़ने लगती है तथा उनके द्वारा प्रस्तुत उत्तर में विश्वसनीयता का अभाव देखा जाता है। Cressy (1990) ने अपने अध्ययनों के आधार पर इस निष्कर्ष पर आया है कि साक्षात्कार की अवधि 10 से 15 मिनट का होना वैज्ञानिक है।

साक्षात्कार में उठने वाली त्रुटि उपर्युक्त स्रोतों के माध्यम से होता है। इन स्रोतों को ध्यान में रखकर साक्षात्कार की व्यवस्था की जाये तो उससे प्राप्त प्रदत्त वैज्ञानिक होते हैं और निष्कर्ष भी विश्वसनीय तथा प्रमाणिक होते हैं।